Snehal Sindhu

Monthly Bulletin for Divine Message of Spiritual Relationship, Friendship and Love
Vol. 011 Issue 07 JULY 2025 Pages 20 A.S. Rs 100

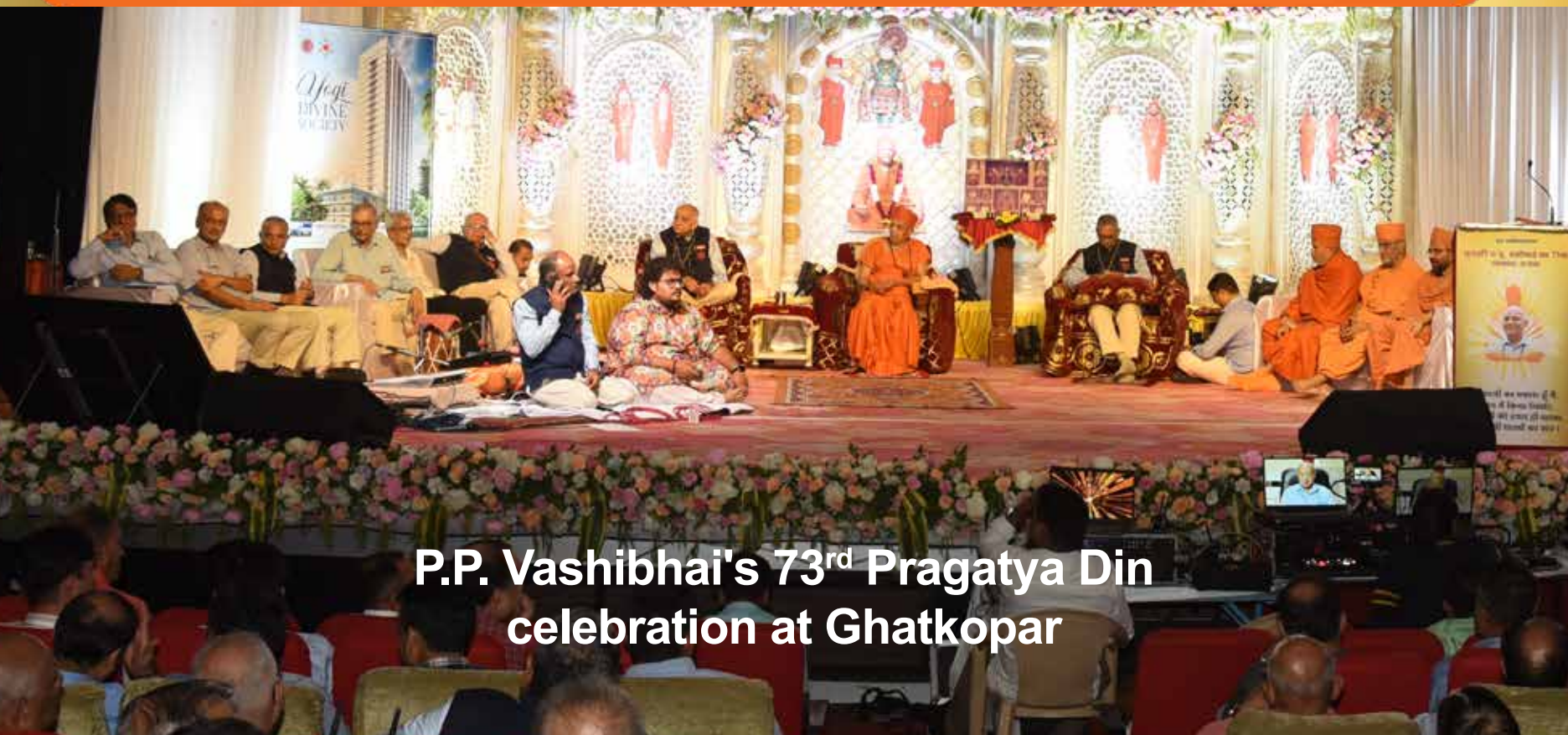

P.P. Vashibhai's 73rd Pragatya Din celebration at Ghatkopar

सत्संग समाचार

❊ **प.पू. वशीभाई के प्रागट्यदिन निमित्त दिल्ली से प.पू. गुरुजी और संतो, प.पू. आनंदीदीदी और संतबहनों तथा करीब ८० हरिभक्तों दि. १ जुलाई को मुंबई पधारे। उन्होंने गुरुवार, दि. ३ से शनिवार, दि. ५ जुलाई दौरान इगतपुरी के Jayshin Vaitarna Resort में विशिष्ट आनंदशिबिर का आयोजन किया था, जिसमें पवई से प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, पू. अश्विनभाई, पू. माधुरीबहन तथा अन्य बहनों और अन्य हरिभक्तों भी जुडे थे। सभीने वेतरणा नदी के तालाब तथा आजुबाजु के वातावरण का लाभ लिया।**

Aanand Shibir at Igatpuri

❊ **गुरुहरि काकाजी महाराज के दिव्य मानस सपूत और सभी गुणातीत स्वरुपों एवं हरिभक्तों के लाडले प.पू. वशीभाई का ७३वाँ प्रागट्यदिन घाटकोपर के झवेरबेन पोपटलाल सभागृह हॉल में शनिवार, दि. ५ जुलाई को दिल्ली के प.पू. गुरुजी और संतों, प.पू. आनंदीदीदी और संतबहनों तथा करीब ८० हरिभक्तों, हरिधाम के पू. योगीस्वरुपस्वामीजी, पू. श्रुतिस्वामीजी, अनुपम मिशन और हरिधाम के संतभाईयों और कईं महानुभावों तथा मुंबई-महाराष्ट्र के कईं हरिभक्तों की हाजरी में आनंदोत्सव के साथ मनाया गया।**

इस समारोह का मुख्य विषय - 'काकाजी का प्रकाश हूँ मैं, जीवन में किया निर्धार, काकाजी की इच्छा ही प्रारब्ध, यही सभी शास्त्रों का सार...' रखा गया था।

माहात्म्यदर्शन की श्रृंखला में सबसे पहले प.भ. विलयभाई, प.भ. समाधानभाई, पू. अक्षयभाई आहिरने स्वानुभव के प्रसंगो बताकर महिमागान किया।

प.भ. हेमंतभाई मर्चन्टने वशीभाई के लिये जो प्रार्थना लिखी थी उसका पठन किया।

पू. अक्षरस्वामीजी (दिल्ली)ने कहा कि गुरुजी का भरतभाई, वशीभाई के साथ आपस में जो प्रेम है वो हमने बहुत करीब से देखा है। वे दूर रहते हुए भी बहुत पास है। हमारी दृष्टि के अनुसार हम वशीभाई के कुछ ही गुण गा पाते है। गुरुहरि काकाजी महाराज के अनुग्रह से वशीभाई एक जोहरी है जिन्होंने हम सभीको हीरा बना दिया। उनका खास गुण यहीं है कि भगवान के साथ का आध्यात्मिकता का सुख क्या होता है वह हमें समझाया। जो भी उनको एकबार

मिलेगा तो कभी भूल नहीं सकता। गुरुजी के वो Darling है, ऐसा अनोखा सखाभाव दिखाई पडता है। काकाजी को राजी करने भरतभाई-वशीभाई माध्यम है। तो हम भरतभाई-वशीभाई को आगे रखकर कार्य करें वही प्रार्थना।

पू. योगीस्वरुपस्वामीजी (हरिधाम)ने कहा कि गुरुजी की बहुत कृपा है कि वे दिल्ली से यहाँ हम सबको दर्शन देने पधारे। भरतभाई-वशीभाई दोनों अलग दिखते है, लेकिन वे एक ही है। तो जैसा महिमा अन्य गुणातीत स्वरुपों का है वैसा ही हमें इन प्रगट स्वरुपों का हो जाये वही प्रार्थना।

शिकागो से प.पू. दिनकरभाई ने कहा कि गुरुहरि काकाजी महाराज पहलीबार दि. ७ जुलाई को अमरिका आये थे तब प्रथम दर्शन हुए थे, इसलिये वशीभाई के प्रागट्यदिन की तारीख हमारे लिये यादगार बन गई। सन् १९८६ में वशीभाई यहाँ आये तब उनके साथ बहुत आनंद किया था। वशीभाई MESO Company में कई सालों से काम करते है। वहाँ के लोग उनके साथ एक Director की तरह तो सही, लेकिन एक संत की तरह ही बर्ताव करते है। हरिधाम में जब पहले नये संत तैयार हुए थे तब वशीभाई की मम्मी बहुत खुश हो गई थी। एकबार उनकी मम्मी वशीभाई को इन संतों का महिमा बता रही थी। वशीभाईने वह बात काकाजी को बताई। तो काकाजीने कहा कि आप मम्मी को घर जाकर बोलो कि हरिप्रसादस्वामीजी अन्य युवकों को संत बना रहे है उसमें मेरा भी नाम लिखा है। वशीभाई तो बहुत खुश हो गये। घर जाकर उन्होंने मम्मी को बताया तो उनको सदमा पहुँचा और रोने लग गये। काकाजीने ऐसे चरित्र किये कि वशीभाई के जीव में से उनकी मम्मी और परिवार के प्रति जो प्रीति थी वह निकाल दी। दूसरों का बेटा साधु बने तो खुशी होती है, लेकिन अपना बेटा साधु बने वह उनको अच्छा नहीं लगा। योगीजी महाराजने जैसे संतभगवंत साहेबजी और अन्य युवकों के अंतर को साधु बनाया उसी प्रकार काकाजीने भी वशीभाई को यहीं कपडे में साधुता भेट में दी। साधु बनना यानि हृदय में साधुता लानी है। वशीभाई की यादशक्ति भी बहुत अच्छी है। वशीभाई के कुछ सूत्र मैं बताता हूँ। **(1)** Think globally and act locally. हमें बडा सोचना चाहिए, लेकिन रहना दास का दास बनकर ही है। **(2)** Every success is responsibility, every failure is learning. हमें जवाबदारी के साथ कार्य करते हुए नई बातें सीखनी चाहिए। **(3)** Courtesy becomes custom, vision gets converted into reality. Vision में से Mission, Mission **में** से **Objective, objective** में से **Reality. (4)** Ascending human effort and descending divine grace. **(5)** There is no fullstop in quality. Quality और प्रगति के लिये पूर्णविराम नहीं है। तो ऐसे बडे पुरुष के आशीर्वाद सदा हम पर बने रहे वही प्रार्थना।

P.P. Vashibhai's Pragatya Din celebration at Ghatkopar

प.पू. भरतभाई ने कहा कि गुरुजी खास दिल्ली से मुंबई आकर Surprise तो देते है लेकिन वशीभाई का ७३वाँ जन्मदिन मना रहे है तो वे ७३ हरिभक्तों को लेकर आये है वह सबसे बडी बात है। करीब ७५ साल से हम साथ में है। जहाँ भी जो भी मिले, जैसा भी मिले उसका सहज स्वीकार कर लेना वह वशीभाई के जीवन में सहज है। CA की बडी पदवी प्राप्त होने के बावजुद भी अगर तारदेव में उनको कपडे धोने को कहेंगे तो वो भी वे करेंगे। वे सभीके सेवक के भी सेवक बनकर रहते है। कोई उनके पास अपनी तकलीफ लेकर आते है तो वो तुरंत बोलते है कि हाँ, अच्छा हो जायेगा। वैसे कोई भी छोटा-बडा हो, जो भी उनके संबंध में आता तो उसका काम हो ही जाता है।

एकबार किसी भक्त के घर महापूजा करने गये थे। तब एक ड्राइवर को हम साथ में लेकर गये थे। वशीभाई जो महापूजा कर रहे थे वह उसने बाहर खडे-खडे सुनी। उसको बहुत अच्छा लगा। वशीभाईने उसको बोला कि अगलीबार अंदर आकर बैठकर महापूजा का लाभ लेना। तो उसके बाद हम जहाँ गये थे वहाँ उसने बैठकर पूरी महापूजा देखी और सुनी। उसके करीब एक हफ्ते बाद वो मिले तो उन्होंने कहा कि वशीभाई, मैंने आपकी महापूजा का लाभ लिया तो मेरे सारे व्यसन छूट गये और मैं सत्संगी बन गया हूँ। जैसे हम बगीचे में जाते है तो फूलों की सुगंध आती है, वैसे वशीभाई के पास जो भी जाता है उसको सत्संग की सुवास सहज मिल जाती है। वशीभाई कंपनी में बहुत बडी जिम्मेदारी निभाते है, उनके पास प्रलोभन भी बहुत आते है, लेकिन उनको कोई भी प्रलोभन छूँ नहीं सकता। ऐसे वे बहुत प्रामाणिक संत है। हम दोनों के संबंध को सभी गुणातीत स्वरुपोंने बहुत आगे बढाया है। काकाजी कहते थे कि आप सुहृदभाव से जो भी कार्य करोंगे तो देवता आकर आपका काम करके जायेंगे। उसके फलस्वरुप अब तक पवई संस्था के विकास के लिये जो भी कार्य किया काकाजीने उसे पूर्ण किया, काकाजी के संकल्पने ही काम किया। तो वशीभाई को हम हमेशा राजी रखें और उनकी सेहत अच्छी रहे वही प्रार्थना।

प.पू. गुरुजी ने आशीष देते हुए कहा कि पप्पाजीने कहा था कि आशीर्वाद दिये नहीं जाते, वो तो सहज बरसते है, या खींचे जाते है। तो हम ऐसा जीवन जीये कि हमारे गुणातीत स्वरुपों के आशीर्वाद सहज ही मिल जाये। स्वामीजीने एकबार कहा था कि कैसे भी नैष्ठिक ब्रह्मचारी हो, उससे भी अधिक साथी-मुक्तों के साथ सुहृदभाव से जीवन जीना है और मुश्किल भी है। काकाजीने पवई के योगेश्वरो के रुप में चैतन्य सितारे ऐसे तैयार किये है कि वे हरेक के साथ हिलमिलकर, रसबस होकर रहते है। वचनामृत में महाराजने कहा है कि भगवान को धारण किये हुए पुरुषों भरतखंड में अखंड विचरण करते रहेंगे। आज भी वह पिढी चल रही है। आज ये स्वरुपों जो भी कार्य कर रहे उससे सभी आश्चर्यचकित हो गये है। तो ऐसे समाज में हम हमारे गुरु के आगे हमेशा हाँजी हाँजी करते रहे और आनंद करें वही प्रार्थना।

प.पू. वशीभाई ने आशीष बरसाते हुए कहा कि गुरुजी ८८ साल की उम्र में दिल्ली से आये उसके लिये उनको जितना धन्यवाद दे उतना कम है। गुरुजी और अन्य पढे-लिखे ७१ साधु तैयार हुए वो

उनको योगीजी महाराज के प्रति अद्‌भुत प्रेम था, जिससे उनका काम सरल हो गया। २० हजार साल के आध्यात्मिक इतिहास में काकाजीने बहने भगवान भज सके वह बहुत बडा कार्य किया। साथ ही पप्पाजीने गुणातीत ज्योत की बहनों को साधनामार्ग में आगे बढाया। काकाजी के जीवन से हम ये बात लेकर जाये कि किसीको खुश करने में ही मेरा जीवन है। तो हे काकाजी! पवई मंदिर के नूतनीकरण का कार्य आपकी मर्जी से सहज ही तैयार हो जाये वही प्रार्थना।

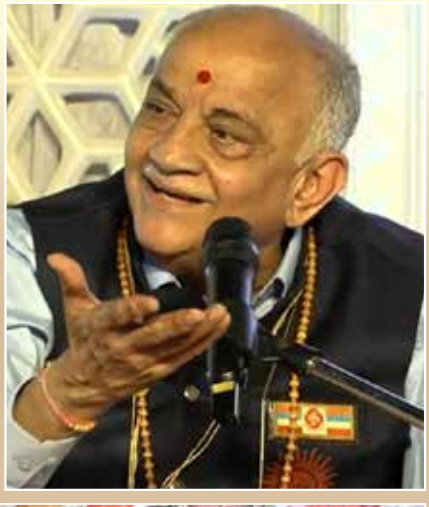

Charity Commosioner श्रीमती सुवर्णा जोशीजी (नागपुर), MESO Comapny से कु. नीताबहन दोशी, MESO Company के मालिक श्री.केतनभाई की पत्नी श्रीमती सेजलबहन तथा अन्य महानुभावों भी खास पधारे थे और पवई की ओर से उनका अभिवादन हुआ।

प.पू. गुरुजी की ओर से वशीभाई को विशिष्ट भेट अर्पण हुई।

दिल्ली मंडल की ओर से पू. राकेशभाई और पू. विश्वासभाईने 'जीवन श्रीजीमय जिनका...' भजन प्रस्तुत किया।

पवई की सभी संतबहनों की ओर से विशिष्ट हार वशीभाई को संतभाईयोंने पहनाया।

P.P. Vashibhai's Pragatya Din celebration at Ghatkopar

P.P. Vashibhai's Pragatya Din celebration at Ghatkopar

P.P. Vashibhai's Pragatya Din celebration at Ghatkopar

अन्य केन्द्रो की ओर से वशीभाई को हार तथा भेट अर्पण हुए।

प.भ. मितेशभाई और सभी युवकोंने पूरे कार्यक्रम की अच्छी व्यवस्था की।

पूरे कार्यक्रम का संचालन पू. मननभाईने बहुत अच्छे से किया।

अंत में प्रागट्यदिन निमित्त केक कटिंग भी हुआ।

उसी प्रकार ऑस्ट्रेलिया मंडलने भी वशीभाई का प्रागट्यदिन भक्तिभाव पूर्वक मनाया।

Celebrations in Sydney

❊ रविवार, दि ६ जुलाई हरिधाम और दिल्ली मंडल के संतों, संतबहनों तथा हरिभक्तों खास तारदेव मंदिर दर्शन के लिये पधारे थे।

Delhi and Haridham Saint, Saint Brothers and Sisters at Tardeo Temple

❊ सोमवार, दि. ७ जुलाई को गुरुहरि काकाजी महाराज की स्मृति में विशिष्ट भजन संध्या चांदिवली के Megarugas Hall में भक्तिभाव से हुई।

प.पू. भरतभाई ने आशीष देते हुए कहा कि गुरुहरि काकाजी कुछ निमित्त बनाकर भी धुन करते और करवाते थे। किसीकी सेहत अच्छी नहीं होती तो उसको खास मिलने जाते और उसके लिये १-१ घंटे तक धुन करते थे। भगवान बहुत दयालु है। हम पर कोई तकलीफ आती है तो वो जरुर हमें सहायरुप होने आते ही है। एकबार जुनागढ में गुणातीतानंदस्वामी की आज्ञा से एक भक्त के घर संतोंने पधरामणी की। बारीश ना होने की वजह से खेती में उसको बहुत नुकसान हुआ था। वो सब बात संतोंने गुणातीतानंदस्वामी को बताई। तब गुणातीतानंदस्वामी वो संतों को

Bhajan Sandhya at Megarugas Hall-Chandivali

ठाकोरजी के पास लेकर गये और २ घंटा धुन की। बारीश तो नहीं हुई लेकिन जमीन के अंदर से पानी आया और उनकी फसल बच गई। हमें जो बाहर की खुशी मिलती है वो हमेशा के लिये नहीं होती, लेकिन काकाजी हमें ऐसा सुख देते है जो कायम रहता है। गुणातीत संत के साथ जितना ज्यादा संबंध दृढ करेंगे उतना अंतर में सुख ज्यादा बढेगा। अभाव-अवगुण की बातें करने से कभी भी कोई सुख प्राप्त होगा ही नहीं। हमको कुछ भी नहीं आता तो कोई बात नहीं लेकिन केवल सभीके गुण का दर्शन करेंगे तो भी बहुत बडी बात है। हर कोई हमें बुरे ही दिखते है उसका मतलब हमारे में ही कुछ खामी है। कम से कम दो जन के गुण तो देखने चाहिए। दो अच्छे साधु और चार हरिभक्त के साथ संबंध दृढ करना है। आत्मबुद्धि और प्रीति संबंधवालों में नहीं किया तो जितना भी सत्संग किया वो व्यर्थ है। वह निर्विकल्प समाधि है। ऐसा गुणातीतानंदस्वामीने बताया है। ऐसा संबंध काकाजीने तारदेव मंदिर में रहकर हमें सीखाया। **स्वामीजी तारदेव को 'आत्मीयता की गंगोत्री' इसलिये बोलते थे** कि वहाँ जो भी आता है उसकी भगवान के भाव से

Bhajan Sandhya at Megarugas Hall-Chandivali

सेवा होती है। तो ऐसे हम सभीके साथ आत्मीयता का संबंध दृढ करें वही प्रार्थना।

उसके बाद Yoga ग्रुप के श्री. नुपूरबहन का स्मृतिभेट देकर सन्मान हुआ।

*** गुरुवार, दि. १० जुलाई को गुरुपूर्णिमा का अवसर 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई में अत्यंत श्रद्धा और भक्तिभाव से मनाया गया। सुबह में प.पू. वशीभाईने महापूजा में विशिष्ट संकल्प किया और सभी की सुखाकारी के लिये एवम् पवई मंदिर के नूतनीकरण के कार्य हेतु खास प्रार्थना भी की।**

Gurupurnima celebration at "Akshardham" Temple, Powai

प्रारंभ में प.भ. हेमंतभाई भर्चन्ट और प.भ. किशोरभाई गिल्डरने गुरुपूर्णिमा का महत्व स्वानुभाव के प्रसंगो से बताया।

प.पू. वशीभाई ने कहा कि आज के दिन गुरु कितने भी दूर हो शिष्य उनके दर्शन करने पहुँच ही जाते है। गुरु की हर बात सुननी चाहिए। गुरुहरि काकाजी महाराजने शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज की आज्ञा का पालन किया। गुरु के वचन से ही हमारा विकास होता है। गुरु के हर वचन में उनकी दिव्य शक्ति काम करती है। गुरु को हम जैसा समझेंगे वैसा हमारा स्वभाव का परिवर्तन हो जायेगा। गुरु के वचन में जितनी शंका रखेंगे उतनी हमारी प्रगति रुक जायेगी। हमें गुरुमुखी बनना है। आज गुरुदक्षिणा में हमें स्वयं को अर्पण कर देना है। हमें निर्मानी, निष्कामी, श्रेष्ठ भक्त बनना है। तो हमें देखकर हर कोई सोचे कैसे होंगे काकाजी ऐसा हमारा जीवन बन जाये वही प्रार्थना।

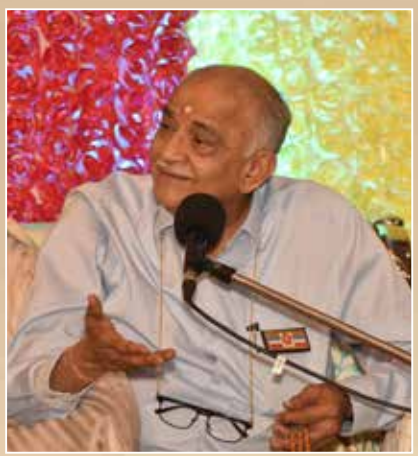

प.पू. भरतभाई ने कहा कि गुरुहरि काकाजी गुरुपूर्णिमा के दिन ज्यादातर परदेश होते थे तो वहाँ से वे हमें पत्र लिखते थे और गुरु का महिमा समझाते थे। एकबार गुरुपूर्णिमा निमित्त काकाजीने सभीके लिये चांदी की वींटी बनवाई थी। उसमें **ज्ञानयज्ञ** लिखवाया था। ज्ञान यानि योगीजी महाराज का नाम ज्ञानजीवनदास और यज्ञ यानि शास्त्रीजी महाराज का नाम यज्ञपुरुषदास। सुबह महापूजा में उन्होंने वो वींटी सभीको दी और कहा था कि ये इसलिये दे रहा हूँ ताकि आप कोई भी क्रिया करो तो गुरु की स्मृति के साथ स्वामिनारायण का भजन करो। वे कहते थे कि गुरु एक ही है - गुणातीत। काकाजी का एक ही भाव था कि किसी भी तरह से गुरुरुप बने। वे कहते थे कि मैं लूहार हूँ। मैं अक्षरधाम की चाबी आपको देता हूँ, आप वो गँवा देते है, फिर भी मैं नई बनाकर देता हूँ। गुरु कभी भी किसी भी बात के लिये जबरजस्ती नहीं करते। गुरु की ईच्छा होती है कि आप उनके बताये मार्ग पर चले। गुरु वो है जो शिष्य को प्रेरित करने के लिये खुद बर्ताव करते है। सच्चे गुरु को सच्चा शिष्य नहीं मिला होगा, लेकिन सच्चे शिष्य को सच्चा गुरु जरुर मिलता है। शिष्य को तैयार करने गुरु सबसे ज्यादा परिश्रम करते है। काकाजी खुद दिन में करीब १० बार धुन करते थे।

Hindola at "Akshardham" Temple, Powai

गुरुपूर्णिमा के दिन हमें कुछ बातों का संकल्प लेना चाहिए। **(१) सुबह में पूजा करना। (२) हररोज सुबह-शाम आरती करनी। (३) हररोज सत्संग करना, कथावार्ता सुनना। (४) घरसभा करना।**

(५) पवित्र जीवन जीना। (६) किसीका शोषण ना करके नीतिमता से काम करना। (७) गुरु का नाम खराब हो ऐसा बिलकुल नहीं करना है। जैसे एकलव्यने गुरु की मूर्ति बनाकर ज्ञान प्राप्त किया वैसे हमें भी गुरु हमें पसंद करें या ना करें लेकिन हमें गुरु के सच्चे शिष्य बनकर ज्ञान प्राप्त कर लेना चाहिए। कुछ लोग पूछते है कि मैं आज के दिन गुरु को क्या अर्पण करुं? तो हमें अपना जीवन ही अर्पण करना है। ऐसे जीना है कि गुरु को हाश हो जाये। तो हम हमारे गुरु का नाम रोशन कर पाये ऐसा जीवन जीये वही प्रार्थना। उसके बाद उन्होंने पत्रसंजीवनी में काकाजी का गुरुपूर्णिमा का पत्र पढा।

उसी प्रकार Yoga के प.भ.डॉ. दीपकभाई तथा अन्य शिक्षकों और विद्यार्थीओंने भी संतभाईयों का पूजन कर गुरुपूर्णिमा का पर्व मनाया।

साथ ही हिंडोला के पावन अवसर निमित्त विशिष्ट हिंडोला के सभीको दर्शन हुए।

Gurupurnima celebration by Yoga Batches at "Akshardham" Temple, Powai

❊ **शनिवार, दि १२ जुलाई को संभाजी नगर (औरंगाबाद) में पवई के संतभाईयों, संतबहनों और कई हरिभक्तों की हाजरी में प.पू. वशीभाई का ७३वाँ प्रागट्यदिन 'अडसठ तीरथ मारा संतने चरणे...' विषय पर उत्साहपूर्वक मनाया गया।**

प्रारंभ में छोटे बच्चोंने सैनिक की वेशभूषा में सभी संतभाईयों और संतबहनों का स्वागत किया। उसके बाद युवक-युवर्तीयोंने नृत्य प्रस्तुत कर वशीभाई के चरणों में अपना भाव रखा।

P.P. Vashibhai's Pragatya Din celebration at Sambhaji Nagar

P.P. Vashibhai's Pragatya Din celebration at Sambhaji Nagar

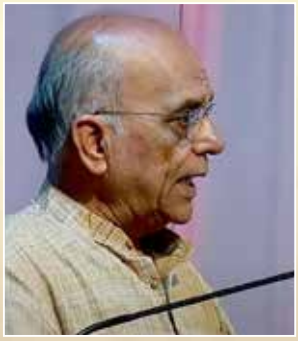

माहात्म्यदर्शन की शृंखला में प.भ. राजुभाई वाढेर, प.भ. जीवनभाई चौंडिया, प.भ. सतीशभाई खैरे, प.भ. हेरत वाढेर, प.भ. अवधुतभाई बने, प.भ. लक्ष्मीबहन, प.भ. भाग्यश्रीबहन, पू. हर्षितभाई लाड, प.भ. जैन साहब, पू. माधुरीबहनने वशीभाई के विशिष्ट गुणों का स्वानुभव के प्रसंगो द्वारा दर्शन कराया।

प.भ. दिलीपभाई थोरात तथा पूर्व नायक वित्तमंत्री डॉ.श्री. भागवत कराडजी और उनकी पत्नी श्रीमती अंजलिजी भी खास पधारे थे। संतभाईयोंने विशिष्ट स्मृतिभेट देकर उनका अभिवादन किया।

प.पू. भरतभाई ने कहा कि आज संभाजी नगर बहुत बडा और भक्तिभाववाला मंडल तैयार हो गया है। वशीभाई का संकल्प है कि यहाँ बहुत बडा केन्द्र बनेगा और बहुत सारे हरिभक्तों उसमें लाभ लेंगे। तो वो जरुर होगा। आज का जो विषय है वह अडसठ तीरथ वशीभाई के चरणों में है। आज हमें यहाँ से कुछ लेकर जाना है। उनके गुणों की कुछ बातें में करता हूँ। **(१)** वे हमेशा मूर्ति में रहते है। बहुत सारे कार्य करते

P.P. Vashibhai's Pragatya Din celebration at Sambhaji Nagar

हुए भी भजन करने बैठते है तो प्रभु में लीन हो जाते है। **(२)** वे हमेशा 'चमत्कार हो गया' ऐसा बोलते है। भगवान का चमत्कार उनको सहज दिखता है। वैसे कुछ भी हो जाये अच्छा या बुरा फिर भी उसे भगवान का चमत्कार हमें मानना चाहिए। बुरी घटना को भूल कर सकारात्मक बातों को याद रखना चाहिए।

वशीभाई CA है और MESO Company में बहुत बडे पद पर है, फिर भी हमेशा प्रभु के सेवक बनकर कार्य करते है। ऐसा सेवकभाव हमें हमारे जीवन में दृढ करना है। हम ५५ साल से साथ में है, लेकिन कभी भी हमारे बीच तेरा-मेरा नहीं हुआ। हम पवई के सभी भाईयों इतने साल से एक होकर रहते है। भगवान की कृपा होती है तभी ऐसे संभव होता है। सेवक का सेवक बनकर रहेंगे तो सचमुच हमने वशीभाई का प्रागट्यदिन मनाया ऐसा कहा जायेगा। ये दो दिन में कल्प का काम होनेवाला है। कल हम हरिमंदिर का पाटोत्सव मनायेंगे। तो हमारा जीवन प्रभुमय, सुखमय और दूसरों को सहायरुप हो ऐसा बने वही प्रार्थना।

P.P. Vashibhai's Pragatya Din celebration at Sambhaji Nagar

P.P. Vashibhai's Pragatya Din celebration at Sambhaji Nagar

प.पू. वशीभाई ने आशीष बरसाते हुए कहा कि आज जो कुछ भी है वह गुरुहरि काकाजी महाराज की कृपा का फल है। हमारा हर कदम केवल उनकी ओर ही बढना चाहिए। यहाँ संभाजी नगर (औरंगाबाद) सत्संग होगा ये केवल प.भ. दीपकभाई और प.भ. चित्राबहन जहागीरदार के कारण संभव हुआ है। संभाजी नगर के हरिभक्तों का भाव बहुत है। तो भरतभाईने जो आशीर्वाद दिये है वैसे यहाँ बडा केन्द्र सहज बन जाये वही प्रार्थना।

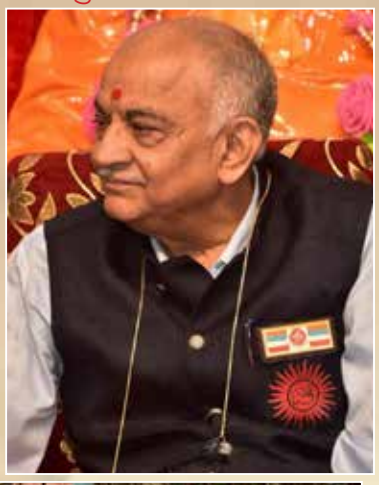

संभाजी नगर मंडल की ओर से विशिष्ट हार हरिभक्तोंने वशीभाई को अर्पण किया।

अंत में प्रागट्यदिन निमित्त केक कटिंग हुआ।

पूरे कार्यक्रम का संचालन प.भ. नरेशभाई मूलेने अच्छे से किया।

P.P. Vashibhai's Pragatya Din celebration at Sambhaji Nagar

सोमवार, दि. १३ को संभाजी नगर हरि मंदिर का १७वाँ पाटोत्सव संतभाईयों की उपस्थिति में भक्तिभाव से हुआ। ठाकोरजी को विशिष्ट अन्नकूट अर्पण कर सभीने आरती का लाभ लिया। अंत में भरतभाई और वशीभाई के आशीर्वाद सभीको प्राप्त हुए।

Hari mandir Patotsav at Sambhaji Nagar

❊ रविवार, दि. २० से मंगलवार, दि. २२ जुलाई दौरान पवई के संतभाईयोंने गुजरात में हमारे गुणातीत समाज के केन्द्रो में और साथ ही कईं हरिभक्तों के घर पधरामणी की।

दि. २० को रुमला घोलार के स्कूल में बच्चों को योगी डिवाईन सोसायटी की ओर से स्कूल बेग का वितरण किया गया।

At Haridham

At Sankarda

At Anoopam Mission-Mogri

At Gunatit Jyot-Vallabh Vidhyanagar

At Pappaji Tirth

Distribution of School Bags at Rumla-Gholar

At Vapi

❊ रविवार, दि. २७ जुलाई को अक्षरधाम, स्वामिनारायण मंदिर, पवई में विशिष्ट **International Youth** सभा का आयोजन किया गया था, जिसमें देश-विदेश के करीब २०० युवाओंने भाग लिया। शिकागो से प.भ. अमितभाई शाह, संभाजी नगर के **Police Inspector** प.भ. अवधूतभाई बने, प.भ. श्रुतिबहन गुप्ते, लंडन से प.भ. बीनाबहन कामदारने आध्यात्मिकता के साथ अन्य कईं सामाजिक विषयों पर अच्छी जानकारी दी।

अंत में दिल्ली से प.पू. गुरुजी, शिकागो से प.पू. दिनकरभाई, पवई से प.पू. भरतभाई तथा प.पू. वशीभाईने विशिष्ट आशीर्वाद दिये।

❊ गुरुवार, दि. ३१ जुलाई को सद्भाव फाउन्डेशन की कु. नीताबहन दोशीने पवई मंदिर के नूतनीकरण के कार्य में अपना मुख्य योगदान देते हुए कर्मचारीओं को जूते और सुरक्षा जेकेट दिये।

Distribution of Shoes and Safety Jackets at "Akshardham" Temple, Powai

❊ ❊ ❊

અક્ષરધામ ગમન

ગુરૂહરિ પપ્પાજી મહારાજ તથા પ.પૂ. બેન (શાંતાબહેન)નાં પરમ ભક્ત, ગુણાતીત સમાજ–લંડનનાં વડીલ અને પૂ. કિશોરભાઈ માસ્ટર્સ (લંડન)નાં માતુશ્રી પૂ. ગજરાબા (ઉંમર–૧૦૨) ગુરુવાર, તા. ૩૦ જુલાઈના સુખે–સુખે સ્વધામ પધાર્યાં.

પપ્પાજી અને બેન સાથે જોડાયેલાં હોવા છતાં સમગ્ર ગુણાતીત સમાજ તેમને માટે પોતાના જ પરિવાર સમાન હતો. તેથી તેઓ કોઈપણ પ્રકારની ભેદદૃષ્ટિ રાખ્યા વગર સર્વે માટે પ્રાર્થના કરતાં. સહુને પણ તેમને માટે પ્રેમ અને ખૂબ આદર હતો.

તેમના જીવનમાં ઘણા પ્રસંગો આવ્યા પણ ભગવાન સ્વામિનારાયણ અને પ્રત્યક્ષ સ્વરૂપો પ્રત્યેની તેમની નિષ્ઠા અચળ રહી હંમેશાં તેઓ તેમની સાથે પ્રાર્થના સ્વરૂપે માળા રાખતાં અને અખંડ નામજપ કરતાં. તેમના મુખારવિંદ પર સ્મિત અને સહુને માટે આત્મીયતાનો ભાવ રહેતો. તેમનાં સર્વે અંગત પરિવારજનો માટે તેઓ હિંમત, પ્રેમ અને સહકારનું જીવતું જાગતું ઉદાહરણ હતાં અને તે પ્રમાણે સહુને માર્ગદર્શન પણ આપતાં.

ગુરૂહરિ કાકાજી સાથે પણ તેમની ઘણી સ્મૃતિઓ છે. એક વખત કાકાજી જ્યારે કિશોરભાઈના ઘરે પ્રસાદ લેવા પધાર્યા હતા. ત્યારે ગજરાબા કાકાજીની સામે જ બેઠાં હતાં અને એમને ગળામાં દુખાવો હતો તેથી બોલી નહોતાં શકતાં. ત્યારે કાકાજીએ તેમના ઘર મંદિરની ભગવાનની બધી જ મૂર્તિઓની સામે જોઈ ધૂન કરી કહ્યું કે 'તમારે ૨૧ દિવસ સુધી પાન ખાવાનાં. એમાં પ્રથમ દિવસે એક, એમ રોજ એક–એક પાન વધારતા જવું. અને ૨૧મે દિવસે ૨૧ પાન ખાઈને પૂરાં કરવાનાં.' ગજરાબાએ એ પ્રમાણે કર્યું તો સહુનાં આશ્ચર્ય વચ્ચે તેમને એકદમ સારું થઈ ગયું. વળી તે વખતે કિશોરભાઈનું જમવાનું મોળું અને મસાલા વગરનું હતું, જ્યારે કાકાજી તથા સહુ ભક્તો માટે સ્વાદિષ્ટ અને મસાલેદાર વાનગીઓ બનાવી હતી. તે વખતે કાકાજીએ કારણ પૂછ્યું તો ગજરાબાએ જણાવ્યું કે કિશોરભાઈ યોગની સાધના કરે છે તેથી તેમને માટે આવું ભોજન બનાવ્યું છે. તે વખતે કાકાજીએ પોતાની થાળીમાંથી કિશોરભાઈની થાળીમાં પ્રસાદ મૂક્યો અને કહ્યું કે આજથી તમારા યોગની સાધના પૂર્ણ થાય છે. એ સાંભળી ગજરાબાને એમ થયું કે કિશોરભાઈ એમના સ્વભાવ પ્રમાણે ગુસ્સે થઈ જશે. પણ એવું કંઈ જ ન થયું અને કિશોરભાઈએ સહજ જ એ પ્રસાદ ગ્રહણ કર્યો. તેથી ગજરાબાને કાકાજી પ્રત્યે ખૂબ ભાવ થયો. આ રીતે કાકાજીએ પોતાની સામર્થી અને ભક્તવત્સલતાનું સુંદર દર્શન કરાવ્યું.

ગજરાબા તો અખંડ અક્ષરધામમાં જ છે. તેથી આપણે સહુ તેમના જેવા દિવ્ય ગુણો પ્રાપ્ત કરી શકીએ એવી ભગવાન સ્વામિનારાયણ, ગુરૂહરિ કાકાજી મહારાજ, ગુરૂહરિ પપ્પાજી મહારાજ, પ.પૂ. બેન તથા સર્વે ગુણાતીત સ્વરૂપોને પ્રાર્થના.

॥ સ્વામિશ્રીજી ॥

તા. ૦૫/૦૭/૨૦૨૫

માધુર્યનો અગાધ સમંદર

પ.ભ. કિશોરભાઈ ગિલ્ડર

હે આનંદમૂર્તિ વશીભાઈ, હે પ્રેમલમૂર્તિ વશીભાઈ,
કાકાજીનું ભૂલકું છે તું, નિર્દોષ, નિર્મલ, ચંચલ છે તું,
સહુનો પ્યારો, સહુથી ન્યારો, તું છે પ્રભુનો લાડકવાયો,
જીવંત રાખી જ્યોત પ્રગટની, જ્યોતિર્ધર બન્યો સવાયો...

તારી મૂર્તિ સમંદરની ભરતી, ઊછળે છોળો આસમાને અડતી,
માધુર્યનો તું અગાધ સમંદર, દિલ તારો દરિયો, સ્નેહનો તું છે સાગર,
તારી વાણી સ્નેહ સરવાણી, ઘોધ સમ વહે નિત્ય એ પરાવાણી,
અસ્ખલિત વહેતી, અંતર ભીંજવતી, આતમ દ્વારે દસ્તક દેતી...

તારા આતમે રવિ પ્રકાશે, અજવાળા તવ હૃદયાકાશે,
ઝળહળતા અંતર તણા ઉજાસે, દ્વંદ્વ કે નિરાશા નજીક ના ભાસે,
તન ધવલ ને મન ઉજ્જવલ છે, આભામાં તેજ અને અલખના નજારા છે,
પળમાં દૂર કરે જન્મોના અંધારાં, મઝધારે રહી કરે રોશન કિનારા...

યુવા હૃદયનો તું ધબકાર, યુવાન સ્વપ્નનો તું ચિત્રકાર,
છવાઈ ગયો તું યુવા જગતમાં, સાચી યુવાનીનો તું શિલ્પકાર,
ખીલવ્યાં તેં ફૂલો અને ખીલવી તેં કળીઓ, ચારે તરફ ખીલી વસંતબહાર,
મહેકતું ને મલકંતું જીવન છે તારું, ચિર યુવાન તું સદાબહાર...

મહાપૂજા તારી જીવંત ને જાગૃત, કરે જે સંકલ્પ થાય એ સાકાર,
માગો તે મળે ને ઈચ્છો તે ફળે, ભક્તોના ભાવ તું પ્રભુને પહોંચાડે,
ભૂલકું બની તું પ્રભુને પોકારે, ગરૂડ ત્યજીને એ દોડતા આવે,
તારી ભાવનાને પાંખો આવે, ભક્તોના મનોરથ પૂરણ થાયે...

ભક્તો કાજે તું દોડાદોડ કરતો, આસમાનમાં ઉડાઉડ કરતો,
પોકારે ત્યાં પહોંચી જતો, પ્રગટપણાનો અહેસાસ કરાવતો,
અકારણ પ્રેમ કરે તું સહુને, પ્રેમથી વશ કરે તું સહુને,
કાકાજીનો કરિશ્મા છે તું, ચિદાકાશનો ફરિશ્તા છે તું...

નિર્માની, નિઃસ્વાર્થી, નિષ્કલંક તું, દિવ્ય ગુણોનો ભંડાર તું,
સુહૃદ સાધુ સર્વદેશી તું, અલગારી અનિર્દેશી તું,
તારી પ્રતિભા જહાં જહાં, તારી અસ્મિતા જહાં જહાં.
તારી પ્રભુતા જહાં જહાં, તારી સાધુતા જહાં જહાં...

હૃદયમાં પ્રભુની રસઘનમૂર્તિ, રાખી અખંડ એ મંગલમૂર્તિ,
છૂટથી લૂંટાવે એ નિર્દોષમૂર્તિ, આવે સંબંધમાં જે કોઈ વ્યક્તિ,
સંબંધવાળાને સુખિયા કરવા, એ જ કેવળ ભક્તિ તારી,
તું સાધુ પરમ સુખકારી, તું સાધુ પરમ હિતકારી...

જય શ્રી સ્વામિનારાયણ

॥ સ્વામિશ્રીજી ॥

તા. ૦૫/૦૭/૨૦૨૫

પરમ પૂજ્ય વશીભાઈના ૭૩મા પ્રાગટ્યપર્વે

પરમ પૂજ્ય વશીભાઈ,
સર્વે ગુણાતીત સ્વરૂપોના લાડીલા,
સર્વે સંતોના અને સંતભાઈઓના સખા,
સર્વે સંતબહેનો અને બહેનોના વ્હાલા,
સર્વે હરિભક્તો અને બાળકોના પ્યારા,
એવા વશીભાઈ! સૌથી નિરાળા, સૌથી ન્યારા...

એક દેહમાં અનેક પ્રતિભા,
હાલતી-ચાલતી નહીં, પણ દોડતી-ઊડતી,
જમીન પર નહીં, પણ આભને આંબતી,
એક જિંદગીમાં અનેક જિંદગી જીવતી,
સાધુતાના વૈભવવાળી, પ્રભાવશાળી પ્રતિમા...

એક ચેષ્ટામાં અનેક ચેષ્ટાઓ, એક દૃષ્ટિમાં અનેક દૃષ્ટિઓ,
એક કાંકરે એક નહીં, પણ અનેક પક્ષીઓનું કલ્યાણ કરતા,
પક્ષી તો એક પ્રતીક છે, પણ અનેક માણસોને મહાત કરતા,
એવા બહુયામી, બહુમુખી, બહુગામી વ્યક્તિત્વના ધારનારા,
માનસરોવરના રાજહંસ સમા, નિરક્ષીર વિવેકી,
મોતીનો ચારો ચરનારા...

એક પળમાં અનેક પળનું જીવન,
એક વાતમાં અનેક વાતોનું દોહન,
એક દૃષ્ટિમાંહીં અનેકને માપી લેતું જીવનદર્શન,
અને છતાંય સહુની સાથે સહુના જેવા સહુના થઈને રહેતા,
જાણે ખળખળ વારિ વહેતી, મધુર કલકલ નાદ કરંતી,
સહુમાં ભળતી, હસતી-હસાવતી, આનંદ અને ઉલ્લાસ કરાવતી,
જિંદગીના પાઠ શીખવતી, સદાય તાજગી સ્મૃતિ અર્પતી,
ક્યારેક ઉગ્ર ને ક્યારેક સૌમ્ય, પણ નિતાંત એ નખશીખ ઘૌમ્ય,
એવી પાવનકારી ગંગા જેવી, શીતલતા અર્પતી સરિતા...

એક સાથે કેટલાંય સત્કર્મો કરે,
૭૨ વર્ષે પણ ૨૭ વર્ષ જેવું જોમ રોમેરોમે પ્રગટે,
પવઈ મંદિરની નાણાંકીય વ્યવસ્થા, ભાર કોઈનેય જણાવે નહીં,
એકલા જ હસતા સહન કરી લે,
આંખે પાટા બાંધી કોઈનું કાંઈ જુએ જ નહીં,
પેટે પાટા બાંધી બોજ બધો વહન કરી લે...

ચાલે કરતાં દોડે વધારે અને તે કરતાં પણ ઉડે વધારે,
ક્યારેય નિરાંતની પળ નહીં,
પગ વાળીને બેસે એવી કોઈ કળ નહીં,
છતાંય કોઈ કાર્ય ક્યારેય વિફળ નહીં,
કારણ એ કાર્ય નહીં, સત્કર્મો છે,
એક જ 'સ્વ'માં અનેક સ્વધર્મો છે...
નાણાંકીય, કાયદાકીય, સામાજિક કે વ્યાવહારિક,
બધી જ જવાબદારીઓનો ગોવર્ધન,
લગભગ એકલે હાથે ઉપાડે છતાંય
એ લૌકિકતામાં અલૌકિક અને આધ્યાત્મિક જીવન ઝંખે,
ચિદાકાશી ગગનમાં એ ઉડે સક્ષમ પંખે...

જીવન ચોખ્ખું પારદર્શક, વાતો સ્પષ્ટ ને ધારદર્શક,
વર્તન સહુ માટે ઉપકારદર્શક, એમ વીત્યાં સાત દશક,
પણ હજુય નાના ભૂલકાં જેવા, હૃદયથી પાકાં ગલકાં એવા,
દિલથી સહુને મળે સાલસ સ્વભાવે, રૂથીય પોચા હલકા એવા...

મહાપૂજા કે ભજન કરે, ધૂન કરે કે કથા કરે,
શિબિર-સભૈયા-સભા કરે,
કર્મયોગ કરે, ધર્મયોગ કરે, સ્વરૂપયોગ કરે,
ક્યારેક પૂર્વયોજીત કરે, તો ક્યારેક યોગાનુયોગ કરે,
પણ ક્યારેય પ્રભુથી એક પળનોય વિયોગ ન કરે,
ભક્તો સાથે સહિષ્ણુ, સાથીદારો સાથે સહચર્યના,
શાશ્વત સુખદ સહયોગ કરે...

ધન કમાય ખૂબ, પણ નીજ માટે વાપરે ઓછું,
પુણ્ય કમાય ખૂબ, પણ જગત માટે ખર્ચે ઓછું,
બધી જ કમાણી સત્કર્મોમાં સમાણી,
જીવન એવું જીવ્યા કે જાણે પળપળની ઊજાણી...

એવા વ્હાલા વશીભાઈ!
તમારી પ્રીતિ સહુથી સવાઈ,
કાકાજીના સંબંધવાળામાં તમે ગયા ખોવાઈ,
વ્યક્તિત્વ મીટાવ્યું, અસ્તિત્વ ઓગાળ્યું,
અમ સહુમાં ગયા ખોવાઈ,
અમે તમમાં જઈએ સમાઈ, અમે તમમાં જઈએ સમાઈ...

'અક્ષરધામ' મંદિર, પવઈના સંતભાઈઓ, સંતબહેનો તથા મુક્તસમાજના જય શ્રી સ્વામિનારાયણ.

RNI Regn No : MAHMUL/2015/62272
Date of publication: 8th of every month
POSTED AT MUMBAI PATRIKA CHANNEL SORTING OFFICE MUMBAI 400001

Postal Regn No: MCW/329/2018-20
Date of posting:11th of every month

Summary of Events

(1) Aanand Shibir in Jayshin Vaitarna Resort at Igatpuri in presence of P.P. Guruji from 3rd to 5th July. (2) P.P. Vashibhai's 73rd Pragatyadin celebrations at Zaverben Popatlal Sabhagruha-Ghatkopar on 5th July. (3) Bhajan Sandhya on 7th July at Megaragus Hall, Chandivali. (4) Visit by P.P. Guruji and Group at Tardeo Temple on 6th July. (5) Guru Poornima celebration on 10th July at "Akshardham" Temple, Powai. (6) P.P. Vashibhai's Pragatyadin celebration at Sambhaji Nagar on 12th July. (7) Sambhaji Nagar Hari Mandir's 17th Patotsav on 13th July. (8) Visit by Saint Brothers to Gujarat from 20th to 22nd July. (9) International Youth Sabha at "Akshardham" Temple, Powai on 27th July. (10) Kumari Nitaben Doshi gave Shoes and Safety Jackets to workers for New Project at "Akshardham" Temple, Powai on 31st July. (11) Prayer for P.P. Vashibhai on his 73rd Pragatya Din on 6th July. (12) Akshardhamgaman of P.B. Gajarabaa on 31st July.

Space for address

Space for franking

Printed Matter - Book Post

From

YOGI DIVINE SOCIETY
6D Sonawala Building, Tardeo,
Mumbai - 400 007 Tel: 2380 2527

'Akshardham' Swaminarayan Temple,
Near Hiranandani Hospital, Powai, Mumbai - 400 076
Tel: 2578 2151/2579 4314 Email: isrc@kakaji.org

Printed & Published by Bharat P Mehta on behalf of Yogi Divine Society & Printed at Jalaram Enterprise, Fairy Manor, 13, Rustom Sidhwa Marg (Gunbow Street), Fort, Mumbai - 400 001 & Published by Yogi Divine Society, 6D, Sonavala Building, 4th Floor, Tardeo, Mumbai - 400 007.

Editor: Bharat P Mehta